सार्वभौम मानव धर्म का अनुसंधान: भारत में एक अद्भुत घटना

सर्व मानव ने शुभ चाहा है, शांति एवं सामंजस्य चाहा है | इस दिशा में आज तक कई प्रयास हुए हैं, परन्तु संतोष जनक परिणाम नहीं निकला | इन प्रयासों में विभिन्नताएं भी दिखती हैं| आदि काल से, हम मानवों का विकास हमारे स्वयं के बारे में समझ एवं अस्तित्व (वास्तविकता) के समझ पर निर्भर किया है| पत्थर कैसा है, जानवर कैसा हैं, इन सब में तो हम अधिकाँश मुद्दों पर एक-मत हो पाएं हैं, परन्तु मानव क्या है, क्यों है, कैसा है, इसपर एकमत होना, सार्वभौमिक होना अभी तक प्रतीक्षित है| अर्थात, हम सर्व देश में रहने वाले मानव, भौतिक क्रियाकलाप प्र विश्वास करते हैं, जबकि मानव के क्रियाकलाप पर विश्वास करना अभी तक बना नहीं| इस समस्या के चलते अभी तक मानव का मानवत्व, मानव का आचरण, मानव की मानसिकता, मानव की प्रकृति पर निश्चयन करना संभव नहीं हुआ हैं|

अमरकंटक निवासी श्री ए नागराज के २५ वर्ष के साधना एवं अनुसंधान से यह स्पष्ट हुआ है कि अस्तित्व (वास्तविकता) सह-अस्तित्व है, शून्य (स्पेस) में संपृक्त इकाइयों के रूप में है| ये इकाइयां ४ अवस्थाओं के रूप में प्रत्यक्ष हैं: जो पदार्थ, प्राण, जीव एवं मानव के रूप में है| इकाइयां स्वयं में व्यवस्था में हैं, एवं समग्र व्यवस्था में भागीदार हैं, अथवा सामंजस्य में हैं| मानव भी व्यवस्था में होना चाहता है, जो ज्ञान पूर्वक ही संभव हैं|

मानव की मूलभूत चाहना सुखी होने की है, जो समाधान से ही संभव हैं, सही समझ, ज्ञान से ही संभव है| मानव की समस्त समस्याएं समाधान, ज्ञान के अभाव के कारण ही है| अस्तित्व में व्यवस्था को समझना, चारों अवस्थाओं (पदार्थ, प्राण, जीव, मानव) में व्यवस्था को समझना ही मानव धर्म हैं| यही 'समाधान' हैं | प्रस्तुत 'ज्ञान' निरपेक्ष है, प्रत्येक मनुष्य के लिए समान है, निश्चित है, सार्वभौम है| इस आधार पर सार्वभौम मानवीय आचरण एवं सार्वभौम मानवीय मूल्य स्पष्ट होता है, जिससे अखण्ड मानव समाज - सार्वभौम व्यवस्था की सम्भावना उदय होती है|

इस 'समझ' को शिक्षा विधि में लाने का स्वरूप तैयार किया जा चुका है, एवं भारत में पिछले १५ वर्षों में लगभग ३०,००० लोग इस दर्शन के परिचय शिविरों से गुजर चुके हैं| इसपर आधारित मूल्य-शिक्षा छत्तीसगढ़ राज्य स्कूल शिक्षा विभाग, उच्च-शिक्षण संस्थाओं एवं, विश्वविद्यालयों में लागू हो चुके हैं| आज तक श्री नागराज जी से कई प्रसिद्ध वैज्ञानिक, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश, राज्य मुख्य-मंत्री, धर्म गुरु, प्रशासनिक अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षा विद एवं जन सामान्य लोग भी मिल चुके हैं, इस प्रस्ताव को सुने हैं, इनमे से कुछ इसके अध्ययन में लगे हैं|

मध्यस्थ दर्शन के इस प्रस्ताव में यह प्रतिपादित किया गया है कि **मानव जाति एक** है, **मानव धर्म एक** है| **मानव धर्म = सुख = समाधान = समझ** | यह अनुसंधान हम मानवों को अपने संकीर्ण, सामुदायिक मानसिकता से निकलने के लिए आशा की एक नयी किरण है, एक सरल मार्ग प्रशस्त कर देता है, जिससे वास्तव में अखण्ड मानव समाज, सार्वभौम व्यवस्था इस धरती पर स्थापित हो सके|

इसी क्रम में एक सर्व धर्म सम्मेलन आयोजित किया गया हैं, जिसमे इस अनुसन्धान के फलस्वरूप 'सार्वभौम मानव धर्म, मानव जाति एक, मानव धर्म' एक का प्रतिपादन किया जायेगा| यह सभी धर्म के मानवों, एवं वे मानव जो अपने को किसी धर्म से जोड़कर नहीं भी देखते हो को इस प्रस्ताव को अपने ही सद्-विवेक से जांचने के लिए आमंत्रण है | यह सम्मलेन २३ अप्रैल, २०१२, को कानपुर में होगा | अधिक जानकारी के लिए: वेब साईट: www.madhyasth.info देखें, फोन: 9907794154, 9403765359